वर्ष :: 33 अंक : 16
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

प्रकाशन का 33 वां वर्ष

/mithilavarnan

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: रविवार, 15 जनवरी, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

अफगानिस्तान के नक्शे-कदम पर झारखंड

जोर पकड़ रहा अवैध हथियार और मादक पदार्थों का धंधा

- : देवेन्द्र शर्मा :-

रांची : झारखंड प्रदेश की पहचान मादक पदार्थ अफीम और हथियार के क्रय-विक्रय के रूप में बनती जा रही है। जहां एक ओर देश और विदेश से मादक पदार्थों के तस्कर यहां आकर अपने काले धंधे को फैला रहे हैं, वहीं दूसरी ओर नक्सलियों व अपराधकर्मियों ने अपराध के संचालन के लिए हथियार को चप्पे-चप्पे में फैला दिया है। झारखंड प्रदेश में लगभग हर जिले में अफीम समेत मादक पदार्थ तैयार कर राज्य और राज्य के बाहर भेजे जा रहे हैं। अफीम की खेती इस प्रकार हो रही है, जैसे लोग अपने घरों में फूल की क्यारी लगाते हों। अब प्रदेश में अनाज की खेती के स्थान पर लोग अफीम की खेती करना अधिक पसंद कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि इसे कुटीर उद्योग के रूप में लोगों ने अपना लिया हो। इस अनैतिक कार्य में पुलिस की भूमिका संदिग्ध और शक के दायरे में आ गई है। झारखंड ने अफगानिस्तान के पद-चिन्हों पर चलना शुरू कर दिया है। लोगों को कम समय में सौ गुना मुनाफा देने वाला यह धंधा भा रहा है।

लगातार बढ़ती आपराधिक घटनाएं

जानकारों की मानें तो नक्सलियों व अपराधियों ने एक बार पुनः प्रदेश में हिंसा की घटनाओं को अंजाम देना प्रारम्भ कर दिया है। प्रदेश में प्रतिदिन दस से बारह हत्या की घटनाएं रिकार्ड की जा रही हैं। प्रदेश के राजस्व शहर में खासकर, रांची, जमशेदपुर, धनबाद, बोकारो, पलामू, चतरा और चाईबासा में आपराधिक घटनाओं की बाढ़ आ गयी है। बाबा नगरी देवघर में भी खूनी हिंसा की घटना रिकार्ड की जा रही है। हर घटना में अपराधकर्मी हिंसा में अत्याधुनिक हथियार का ही इस्तेमाल कर रहे हैं। नक्सली हों या अपराधकर्मी, सभी दस्ते के पास आधुनिक हथियार उपलब्ध हैं। घटना के बाद यह पाया जा रहा है कि गोली ए के 47, 56 या बिशेष मार्क क्षमता के हथियार से ही चलाये जाते रहे हैं। धनबाद, जमशेदपुर, रांची में हथियार के तस्करों ने अपनी मंडी बनायी है। इन जिलों में हथियार बनाने के कारखाने चलाये जाने की सूचना प्राप्त हुई है।

तेज हुई हथियारों की आपूर्ति

सूत्रों का कहना है कि बिहार के मुंगेर, गया और नालंदा से हथियारों की आपूर्ति एक बार तेज हो गई है। हथियार तस्कर किसी भी हथियार को पूरी तरह तैयार कर नहीं मंगा रहे, बल्कि टुकड़े-टुकड़े में उसे यहां ला रहे हैं। इन राज्य से इनके मिस्त्री को अब सीधे झारखंड के सम्बन्धित जिले, जहां तस्करों का अड्डा होता है, बुलाकर डिमांड के अनुसार तैयार कर उसे बेचने की खबर है। इससे पुलिस की निगाह से बचकर अपने धंधे को चलाने में सहयोग मिलता है।

जंगलों व पठारी क्षेत्रों में अफीम की खेती

अधिकतर अपराधकर्मियों ने वर्तमान समय में मादक पदार्थ के साथ हथियार का धंधा जोरों से चला रखा है। झारखंड के अफीम की मांग बिहार, बंगाल, ओडिशा में अधिक बतायी जा रही है। झारखंड के लगभग हर जिले में, खासकर जंगल और पठारी क्षेत्रों में अफीम की खेती खुलेआम की जा रही है। पुलिस यदि एक किलो अफीम पकड़ती है तो उसी रास्ते तस्कर पांच किलो अफीम बाहर निकाल देते हैं। तस्करों का नेटवर्क लम्बा चौड़ा बनता जा रहा है। इनकी पकड़ भी मजबूत बतायी जा रही है। काले धंधे के रास्ते मे बाधक बनने वालों को वो साफ भी कर देते हैं। झारखंड में धीरे-धीरे युवाओं की पहली पसंद के रूप में अफीम ने जगह बना ली है। यहां अफीम के सेवन में लोगों की रुचि बढ़ती देखी जा रही है।

रिहायशी इलाकों में चल रहे मिनी कारखाने

सूत्रों का यह भी कहना है कि हथियार के सभी उपकरण रेल मार्ग से ही यहां लाये जा रहे हैं। राजधानी के बाद डिमांड के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में उसे भेजा जाता है। सूत्र बताते हैं कि एके 47 की कीमत दो से ढ़ाई लाख होती है, परन्तु यह तैयार इस प्रकार किया जाता है कि विदेशी कम्पनी के उत्पाद फेल हो रहे हैं। बिहार के हथियार मिस्त्री अब अपने औजार व तैयारी के उपकरण लेकर चल रहे हैं। हथियार की मरम्मत का काम हो या नये निर्माण का, वो उनके सामने ही बैठकर ठीक करते हैं, नये निर्माण कर देते हैं। बेहतर गुणवत्ता बाले रिवाल्वर, रायफल सबका दाम निर्धारित रहता है। काम के हिसाब से वो झारखंड के जिलों मे भ्रमण करते हैं। सूत्र का कहना है कि अब हथियार जंगल या पहाड़ों में तैयार नहीं किये जातें हैं, बल्कि घने व रिहायशी शहरी इलाकों में अपराधी रहते भी हैं और उसी स्थल पर मिनी कारखाना भी चल रहा है। झारखंड में हथियार का आयात होता है, परन्तु यहां से मादक पदार्थ का निर्यात खुलकर किया जा रहा है। झारखंड में अवैध हथियार का कारोबार करने वाले विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों को धड़ल्ले से दूसरे राज्यों में तस्करी कर रहे हैं।

आत्मनिर्भर भारत

बोकारो स्टील को मौसम प्रतिरोधी स्टील-आईएस 11587 के लिए मिली अनुज्ञप्ति, आयात पर कम होगी निर्भरता

शिपिंग ग्रेड कंटेनर स्टील का निर्माण अब बीएसएल में भी

संवाददाता

बोकारो : सेल- बोकारो स्टील प्लांट ने आईएस 11587:1986 मौसम प्रतिरोधी स्ट्रक्चरल स्टील, ग्रेड डब्लू आर-एफ ई 480ए (मौसम प्रतिरोधी संरचनात्मक स्टील के लिए सामान्य उपयोग), डब्लू आर-एफ ई- 480बी (लो फॉस्फोरस माइक्रो-एल्लोएड मौसम प्रतिरोधी संरचनात्मक स्टील) और डब्लू आर-एफ ई- 490एच (कंटेनर निर्माण के लिए) निर्दिष्ट मानकों के अनुसार स्टील को रोल करने के लिए के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) से लाइसेंस प्राप्त कर एक अहम उपलब्धि हासिल की है।

उल्लेखनीय है कि कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक स्तर पर शिपिंग ग्रेड कंटेनरों की भारी कमी देखी गई थी। सरकारी प्रतिबंधों और विनियमों के कारण दुनिया भर में कई कंटेनर बंदरगाहों, भंडारण सुविधाओं और जहाजों पर फंसे पड़े थे। बढ़ती मांग, बंदरगाह की भीड़-भाड़ और बंद निर्माण कार्यों ने कमी को और भी बदतर बना दिया था। इसके परिणामस्वरूप शिपिंग लाइनों द्वारा लगाए गए दुनिया भर में कंटेनर माल की दरों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इससे भारत की निर्यात- आयात आपूर्ति श्रृंखला भी प्रभावित हुई। ज्ञात हो कि भारत को हर साल लगभग 3.5 लाख कंटेनरों की आवश्यकता होती है, लेकिन भारत में कोई कंटेनर उत्पादन नहीं होता है और देश को मुख्य रूप से चीन पर निर्भर रहना पड़ता है, जो इसका वैश्विक उत्पादक है। भारत में कंटेनर निर्माण को कंटेनर की कमी के समाधान के रूप में देखा गया, जो चीन पर भारत की निर्भरता को खत्म कर सकता था। समस्या का अध्ययन करने और भारत में शिपिंग ग्रेड कंटेनरों के निर्माण के लिए क्षमता बनाने की योजना तैयार करने के लिए, जून 2022 में प्रधानमंत्री कार्यालय के निर्देश पर एक अंतर-मंत्रालय पैनल का गठन किया गया था। उद्योग के स्टेक होल्डर्स के साथ बातचीत के दौरान समिति ने पाया कि कंटेनर बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला विशिष्ट स्टील भारतीय मानकों में उपलब्ध नहीं था। यह मामला भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के संज्ञान में लाया गया, जिसने अब घरेलू और एक्जिम व्यापार के लिए उपयोग किए जाने वाले घरेलू कंटेनर निर्माताओं की मांग के अनुरूप अपने भारतीय मानक (आईएस 11587:1986) में संशोधन किया है और नए ग्रेड डब्लू आर-एफ ई-490एच की शुरुआत की है, जो कोर्टेन-स्टील के समतुल्य है।

अग्रणी इस्पात निर्माता के रूप में मिली अहम उपलब्धि

एक अग्रणी इस्पात निर्माता के रूप में बोकारो स्टील प्लांट ने स्टील के उक्त ग्रेड के लिए बीआईएस से लाइसेंस प्राप्त कर लिया है। बोकारो स्टील प्लांट हॉट एवं कोल्ड रोल्ड कॉइल, प्लेट और शीट के रूप में नियमित रूप से मौसम प्रतिरोधी स्टील 'सेलकोर' का उत्पादन करता है। यह कॉर्टन स्टील के लिए एक स्वदेशी समकक्ष ग्रेड है और इसका उपयोग भारतीय रेलवे द्वारा मौसम प्रतिरोधी संरचनात्मक/वैगन निर्माण के लिए किया जाता है। बोकारो इस्पात संयंत्र में आयात के विकल्प के तौर पर इन ग्रेडों के उत्पादन से आत्म-निर्भर भारत के विजन को मजबूती मिलेगी।

- संपादकीय -

धर्म ग्रन्थ का अपमान

बिहार के शिक्षा मंत्री चन्द्रशेखर द्वारा हिंदुओं के धर्म ग्रंथ रामचरित मानस को लेकर की गई अपमानजनक टिप्पणी से हिन्दू समाज आहत है। यहां तक कि बिहार सरकार के मंत्रिमंडल में वे जिस पार्टी (राजद) का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, उसके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानन्द तिवारी ने भी उनके बयान को दुःखद व दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। उधर, सरकार के मुखिया नीतीश कुमार की पार्टी जदयू के नेता भी शिक्षा मंत्री पर हमलावर हो चुके हैं। जदयू नेता मन्दिरों में जाकर रामचरितमानस का पाठ करने लगे हैं। जबकि, दूसरी ओर राजद सुप्रीमो लालू यादव के पुत्र और बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी मंत्री के इस बयान से नाराज बताये जाते हैं। बिहार के शिक्षा मंत्री के उक्त बयान की चौतरफा निंदा हो रही है। अयोध्या के संत जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने कहा कि बिहार के शिक्षा मंत्री ने जिस तरह से रामचरित मानस को नफरत फैलाने वाला ग्रंथ बताया है, उससे पूरा देश आहत है, यह सभी सनातनियों का अपमान है और मैं इस बयान पर कानूनी कार्रवाई की मांग करता हूं। आचार्य ने उन्हें मंत्री को पद से एक सप्ताह के अन्दर बर्खास्त करने की मांग की है। अयोध्या के संत ने कहा कि शिक्षा मंत्री को अपने बयान के लिए माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि 'अगर ऐसा नहीं होता है तो वे बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर की जीभ काटने वाले को 10 करोड़ रुपये का इनाम देंगे।' उन्होंने कहा, 'इस तरह की टिप्पणी को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। रामचरितमानस जोड़ने वाला ग्रंथ है, तोड़ने वाला नहीं। रामचरितमानस मानवता को बढ़ावा देने वाला ग्रंथ है। यह भारतीय संस्कृति का स्वरूप है, यह हमारे देश का गौरव है। रामचरितमानस पर इस तरह की टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।' दरअसल, बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने बुधवार को कहा कि रामायण पर आधारित एक महाकाव्य हिन्दू धर्म पुस्तक रामचरितमानस समाज में नफरत फैलाती है। नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के 15वें दीक्षांत समारोह में छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने रामचरितमानस और मनुस्मृति को समाज को विभाजित करने वाली पुस्तकें बताया। उनके इस दावे के बाद विवाद खड़ा हो गया। आश्चर्य की बात यह है कि राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगतानन्द सिंह ने शिक्षा मंत्री के बयान का समर्थन किया, जबकि राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानन्द तिवारी ने जगतानन्द सिंह को बीच में ही टोकते हुए शिक्षा मंत्री के बयान को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उनका कहना था कि महात्मा गांधी ने भी भगवान राम को अपना आदर्श माना है। इसलिए रामचरित मानस के बारे में उनकी टिप्पणी से वे सहमत नहीं हैं। चन्द्रशेखर को शिक्षा मंत्री के पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। राजद सुप्रीमो को चाहिए कि समाज में नफरत फैलाने वाले ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। क्योंकि, समाज को शिक्षित करने वाले मंत्रिमंडल का नेतृत्व संभालने वाले लोगों को मूर्खों जैसी भाषा का उपयोग करने का अधिकार न तो हमारा संविधान देता है और न ही हमारा समाज। हालांकि, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को अपने कक्ष में शिक्षा मंत्री चन्द्रशेखर को विवादित बयानों से परहेज रखने की नसीहत दी। उस समय तेजस्वी यादव भी वहां मौजूद थे, लेकिन उन्होंने चुप्पी साधे रखी। जबकि, जदयू इस मुद्दे पर मुखर हो गया है। कुल मिलाकर, शिक्षा मंत्री के बयान को अगर उनकी कुत्सित राजनीति से जोड़कर देखा जाय तो यह गलत नहीं होगा, क्योंकि उनका बयान निश्चित तौर पर हिन्दू समाज को पुनः विभाजित कर उनके बीच नफरत की भावना फैलाने का एक सुनियोजित षड्यंत्र ही माना जाएगा। इसलिए ऐसे लोगों को शिक्षा मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर बैठे रहने का कोई अधिकार नहीं है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

बिहार में जातीय जनगणना- विभाजन की एक नई तरकीब

- जगन्नाथ शाही -

नीतीश कुमार को समझना बड़ा कठिन है। उनको अगर किसी ने ठीक से समझा है तो लालू यादव जी ने समझा। नीतीश जी भारतीय जनता पार्टी के साथ रहे, काफी समय तक रहे तो इनका तम्बू लालू यादव जी ने उखाड़ दिया था। लालू जी से जब ये अलग हुए थे तो इनका जो अपना क्षेत्र है, वहां से भी इनको हरा दिया गया था। तो फिर ये भाजपा के साथ आये। भाजपा के लोग इन्हें समझ नहीं पाये। लालू जी ने इनके बारे में दो टिप्पणी की है। एक टिप्पणी यह है कि- 'नीतीश कुमार से सावधान रहो। क्योंकि, इसकी आंत में दांत है' और दूसरी टिप्पणी यह कि 'ऐसा कोई सगा नहीं जिसको नीतीश ने ठगा नहीं'। तो नीतीश कुमार को समझने के लिए आपको लालू यादव की विचारधारा से अवगत होना पड़ेगा। हम भी नहीं समझ सके, क्योंकि हम सीधे लोग हैं। भाजपा के लोग भी सीधे थे। भगवान राम भी बगुला को नहीं समझ सके। उन्होंने लक्ष्मण से कहा- लक्ष्मण, बगुला को देखे, कितना बड़ा धार्मिक है, बगुला किस तरह धीरे-धीरे पानी में अपना पैर रख रहा है, ताकि मछलियां कहीं दबकर मर न जाएं। जबकि, बगुला तो धीरे-धीरे इसलिए चल रहा था, ताकि पानी में हलचल न पैदा हो और मछलियां भाग न जाएं।

नीतीश को सिर्फ सत्ता से मतलब

नीतीश कुमार को बिहार की भलाई से क्या लेना-देना? उन्हें किसी जाति से मतलब नहीं, उन्हें तो सिर्फ सत्ता से मतलब है। दरअसल, बिहार में नीतीश कुमार का राजनीतिक तम्बू उखड़ गया है। उसे मजबूत करने के लिए..., क्योंकि जब उनका वजूद संकट में है तो विभाजन की कोई न कोई तरकीब होनी चाहिए, इसीलिए उन्होंने जातीय गणना को स्वीकार किया है। 17 साल तक वे मुख्यमंत्री रहे, इतने दिनों तक उन्होंने इसे क्यों नहीं स्वीकार किया? अचानक इसी समय, जब चुनाव आहूत है, तब इनकी समझ में यह बात आयी कि जातीय आधार पर गणना होनी चाहिए?

समाज का भला होने वाला नहीं

भारत में हिन्दू समाज को विभक्त करने के लिए जिस हथियार का उपयोग अंग्रेजों ने 1930-31 में किया था। जातीय अभिमान पैदा करने के लिए जो काम अंग्रेजों ने किया था, वही काम आज नीतीश कुमार कर रहे हैं। जातीय गणना का यह जो कार्यक्रम उन्होंने चलाया है, उससे अगर किसी का भला होगा तो सिर्फ नीतीश कुमार का होगा, समाज का इससे कोई भला होने वाला नहीं है।

हिन्दू समाज को विभक्त करने की योजना

हिन्दू समाज, जो जातीय आधार पर कभी खड़ा नहीं था। हमारे संतों ने कहा- जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिये ज्ञान...। आज हिन्दू समाज को विभक्त करके जातियों में बांटने की यह कुत्सित योजना है। जैसे ही यह गणना खत्म होगी, हर कोने से आवाज आने लगेगी कि हमारी संख्या 27 प्रतिशत नहीं, 30 प्रतिशत है, 35 प्रतिशत है, अब इसमें सुधार किया जाय। कोई कहेंगे- अब हमारी जनसंख्या सिर्फ 12 प्रतिशत नहीं है, हमारी जनसंख्या 30 प्रतिशत है, इसमें सुधार किया जाय। मंडल आयोग की सिफारिशों के आधार पर समाज का जिस प्रकार विखंडन हुआ, उससे कल्याण तो नहीं हुआ किसी का, तो फिर जो ये नई चेतना आयेगी, उससे क्या कल्याण होने वाला है? अगर आरक्षण किया है तो उसके आधार पर लोगों को ये नौकरी क्यों नहीं दे रहे? रसोई घर में खाने को है कुछ भी नहीं और मेहमानों को बता रहे हैं कि तुम्हें हम ये खाना देंगे- वो खाना देंगे, किसी को कुछ और किसी को कुछ देने की बात करते हैं। लेकिन, जब किसी मेहमान ने जाकर रसोई घर में देखा तो था कुछ भी नहीं। फिर आकर कहा कि आपस में क्यों लड़ना?

प्रत्येक हाथ को ईमानदारी से काम दें

आप जाकर देखें- कितने आदिवासी बैठे हुए हैं, जिन्हें काम नहीं मिला, कितने अनुसूचित जाति के लोग पड़े हुए हैं, जिन्हें काम नहीं मिला। बैकवार्ड-फारवार्ड के आधार पर कितने लोगों को नौकरी मिली? हां! हम विभक्त अवश्य हो गये। हम नहीं कहते कि आरक्षण मत दो, लेकिन अगर आरक्षण दिया है और आपने इस तरह का कोटा तय किया है तो ईमानदारी से प्रत्येक हाथ को काम दो। लेकिन, ये तो नहीं हुआ। तो हिन्दू समाज के विभाजन की ये नई तरकीब है। इसके द्वारा नीतीश कुमार और सत्ताधारी दल के जो अन्य लोग हैं, सिर्फ उनको लाभ होने वाला है, समाज का कतई कल्याण होने वाला नहीं है।

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रांत संघचालक, विहिप के पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एवं वर्तमान में विहिप के केन्द्रीय प्रन्यासी व जाने-माने चिन्तक हैं।)

मैथिली काव्यकृति

तोल मोल कर बोल

सुधीर कुमार झा, कोलकाता

एक से बढ़कर एक देश में,
हीरे हैं अनमोल।
ऊंचे पद आसीन, मगर,
बिगड़े रहते हैं बोल।।

दुनिया भर का ज्ञान समेटे,
जब देते मुंह खोल।
कितने पानी में हैं ये,
खुल जाती है पोल।।

वेद, पुराण, धर्म-ग्रंथ, हो,
या इतिहास, भूगोल।
लगता जैसे ज्ञान-कणों को,
पी गए बना के घोल।।

बड़े-बड़े मंचों से प्रवचन,
देते क्या अनमोल!
तोड़-मरोड़ के तथ्यों को,
बना हैं देते झोल।।

अरि सामाजिक समरसता के,
जहर हैं देते घोल।
नासमझी या जान बूझकर,
कर देते हैं झोल।।

बात करें तो हर बात को,
घुमा हैं देते गोल-गोल।
समझाना मुश्किल उसको,
जो नाचे थाप पर अपने ढ़ोल।।

कहा गया है सोच समझकर,
तोल मोल कर बोल।
सोच-समझ की बात करें तो,
लगता पूरा गोल।

सुख बढ़ता है अगर कहीं कोई,
बोले मीठे बोल।
हे राम! इन्हें सद्बुद्धि दें,
सुधरे इनके बोल।।

पूस जाड़मे बूढ़ा बूढ़ी

ई पूस मास केर जाड़,
अगबे हिला दैत अछि हाड़
बूढ़ा कोना कोनादन
कांपथि, बूढ़ी थरथर
आंचर झांपथि।
बूढ़ा काल के करथि
गोहारि, बूढ़ी जाड़ के
पढ़थि गारि
किछु सिहकी
खिड़कीदने अबैए,
बूढ़ाक देह पित्त
लोहछैए

''बन्न करू, जुनि
फोलू खिड़की, ई
खिड़की सत्यानाशी
बुझि पड़य पाथर भ'
जायब,जाउ जोड़ू झट
अगियासी।
नहि तं लागय कोनो
कालमे, अलगट किछु
घटि जाएत
ताहि सं आगू आओर
होयत की, आब प्राण
चलि जाएत''

बूढ़ी झट झट गोरहा
करसी, खुरही ल'
जोड़लनि आगि
बुझा पड़य जतेक
बलाय, सब जाय रहल
अछि भागि।।

दियासलाई केर
आगिके जगितहिं
ओहि घूरक सभ नस
जगैए।
क्रमशः धधराक ओहि
नाचक संग
बूढ़ा आ' बूढ़ीक
आंखि नचैए!!

- बुद्धिनाथ झा,
नागदह (मधुबनी)।

दो साल बाद फिर होगी गणतंत्र दिवस की धूम

समारोह के सफल आयोजन को ले जुटा प्रशासन; अफसरों को मिलीं जिम्मेदारियां, योजनाओं की पारदर्शिता दिखाएंगी झांकियां

संवाददाता

बोकारो : कोरोनाकाल के दो साल बाद इस बार पूरे धूमधाम के साथ गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित किए जाने की तैयारी बोकारो में की जा रही है। पूरे हर्षोल्लास के साथ राष्ट्रीय पर्व 74वां गणतंत्र दिवस समारोह को मनाया जाएगा। उपायुक्त कुलदीप चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक चंदन झा की अध्यक्षता में गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारी को लेकर समाहरणालय सभागार में बैठक हुई। बैठक में उपस्थित अधिकारियों को इससे अवगत कराते हुए इसे सुनिश्चित करने को कहा गया। उपायुक्त श्री चौधरी ने कहा कि योजनाबद्ध तरीके से राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस को मनाया जाएगा। स्कूली बच्चों द्वारा शहर के विभिन्न हिस्सों में प्रभात फेरी निकाली जाएगी। इसके लिए जिला शिक्षा पदाधिकारी एवं बीएसएल के उप निदेशक को समन्वय स्थापित कर तैयारी करने को कहा। उपायुक्त ने सभी विभागों के वरीय पदाधिकारियों को गणतंत्र दिवस से संबंधित तैयारियों को लेकर जरूरी दिशा-निर्देश दिया। सभी विभागों को झांकी में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को पारदर्शिता दिखाने को कहा। गणतंत्र दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन को लेकर बोकारो क्लब को आरक्षित करने एवं अन्य तैयारियों को लेकर जरूरी निर्देश दिया। वहीं, सुरक्षा के मद्देनजर मुख्य समारोह स्थल पुलिस लाइन मैदान, सेक्टर 12 में मेडिकल टीम को रखने को कहा।

बैठक में समारोह के सफल आयोजन को लेकर अधिकारियों के बीच जिम्मेदारियों का वितरण किया गया। बैठक में मुख्य समारोह स्थल सेक्टर- 12 स्थित पुलिस लाइन मैदान के घास काटने, सफाई कार्य, गमला एवं सौंदर्यीकरण, शहीद स्मारक का रंग-रोगन का कार्य, मुख्य समारोह स्थल की घेराबंदी, पंडाल एवं बैठने की व्यवस्था, पब्लिक संबोधन सिस्टम की व्यवस्था, झंडोतोलन की तैयारी आदि को लेकर विभिन्न विभागों के पदाधिकारियों को अलग झ अलग जिम्मेवारी दी गई। ससमय इन कार्यों को सुनिश्चित करने के लिए पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण के लिए प्रभारी प्रवर एवं नजारत उप समाहर्ता को संयुक्त रूप से प्राधिकृत किया गया। डीसी-एसपी ने संयुक्त रूप से कहा कि आगे राज्य सरकार से इस दिशा में जो भी दिशा- निर्देश प्राप्त होगा, उसका अनुपालन किया जाएगा। इससे पूर्व डीडीसी कीर्तीश्री जी. ने बिंदुवार सभी तैयारियों को लेकर पदाधिकारियों, कर्मियों से चर्चा कर जरूरी दिशा झ निर्देश दिया। बैठक का संचालन प्रभारी पदाधिकारी सामान्य शाखा अभिनीत सूरज ने किया। बता दें कि दो वर्षों तक कोरोना के प्रकोप के कारण गणतंत्र दिवस पर झांकी नहीं निकाली जा सकी थी।

इन विभागों द्वारा निकाली जाएंगी झांकियां

गणतंत्र दिवस समारोह में विभिन्न विभागों की उपलब्धियों को केंद्रित करते हुए झांकियां निकालने की तैयारी का निर्णय लिया गया। समाज कल्याण स्वास्थ्य विभाग मत्स्य विभाग सहकारिता, आपूर्ति, आपदा विभाग, गव्य एवं पशुपालन, कल्याण विभाग, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, कृषि विभाग, जिला अग्रणी बैंक, नाबार्ड, परिवहन विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, नगर निगम चास, शिक्षा विभाग, निर्वाचन विभाग, अग्निशमन विभाग, पुलिस विभाग, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी विभाग, जेएसएलपीएस, खनन विभाग द्वारा झांकी निकाली जाएगी। 20 से 24 जनवरी तक परेड का पूर्वाभ्यास चलेगा। परेड में जैप 04 का एक प्लाटून, जिला सशस्त्र बल का दो प्लाटून, सीआरपीएफ का एक प्लाटून, सीआइएसएफ का एक प्लाटून, गृह रक्षा वाहिनी का एक प्लाटून, सीआईएसएफ का एक बटालियन एवं विभिन्न विद्यालयों के छात्र - छात्राएं शामिल होंगे।

उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया जाएगा सम्मानित

बैठक में सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि मुख्य समारोह स्थल पर परेड पुरस्कार, मेधावी छात्रों, खेल, सांस्कृतिक, कला एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को मेडल, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। संबंधित अधिकारियों को सूची तैयार करना का निर्देश दिया गया है। बैठक में मुख्य अतिथि के स्काट, नगर की साज-सजावट, आमंत्रण कार्ड का मुद्रण एवं वितरण, विधि व्यवस्था संधारण समेत कई अन्य बिंदुओं पर भी चर्चा हुई और जरूरी दिशा झ निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया गया। जिला मुख्यालय की साफ-सफाई को सुनिश्चित करने के लिए चास नगर निगम एवं बोकारो स्टील लिमिटेड प्रबंधन के प्रतिनिधि को जरूरी निर्देश दिया।

ये अधिकारी रहे मौजूद

बैठक में चास नगर निगम के अपर नगर आयुक्त अनिल कुमार, चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, डीपीएलआर मेनका, विशेष कार्य पदाधिकारी विवेक सुमन, जिला परिवहन पदाधिकारी संजीव कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रबला खेस, जिला आपूर्ति पदाधिकारी गीतांजली, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल भारती, आपदा प्रबंधन पदाधिकारी शक्ति कुमार, जिला कल्याण पदाधिकारी सुदीप एक्का, सीसीआर डीएसपी एस. रजक, पुलिस उपाधीक्षक ट्रैफिक पूनम मिंज, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार आदि उपस्थित थे।

स्मृति शेष जिन्दगी की जंग हार गए समाजसेवी अमरदेव उपाध्याय, कौशल विकास में लाई क्रांति

आईटीआई में हुनर सिखाकर हजारों युवाओं को स्वावलंबी बना हो गए 'अमर'

एक बार कैंसर को दे दी थी मात, दोबारा ब्लड कैंसर ने लीला

संवाददाता

बोकारो : विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े रहकर वर्षों तक समाज की सेवा में लगे रहने वाले समाजसेवी अमरदेव उपाध्याय अंततः जिन्दगी की जंग हार गये। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने कैंसर जैसी भयानक बीमारी से लड़कर उसे मात दी थी और पूरी तरह स्वस्थ हो चुके थे। लेकिन, पिछले कुछ दिनों से वे पुनः ब्लड कैंसर की चपेट में आ गए थे, जिससे लड़ते हुए उन्होंने रांची के मेडिका अस्पताल में अंतिम सांसें ली औरचास के गरगा श्मशान घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया। चास की गुजरात कॉलोनी में जन्मे अमरदेव उपाध्याय का निधन लगभग 63 वर्ष की उम्र में हो गया।

आरम्भिक काल में वह बोकारो के चर्चित नेता एवं पूर्व मंत्री स्वर्गीय समरेश सिंह के काफी करीबी रहे। बाद में शिवसेना के एक जुझारू नेता के रूप में उन्होंने अपनी पहचान बनायी। शिवसेना से अलग होने के बाद वे समाजसेवा के कार्य में लग गये। इसके साथ ही उन्होंने कुछ कर गुजरने की तमन्ना से चास के गुजरात कॉलोनी में ही औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की और उसका विस्तार करते हुए चास के सोलागीडीह तथा धनबाद के झरिया रोड में अपनी धर्मपत्नी के नाम पर आशा आईटीआई की स्थापना करते हुए उसे पूरे प्रदेश में एक बड़ी पहचान दिलाई। प्राइवेट आईटीआई संचालक के रूप में वे पूरे झारखंड में प्रतिष्ठित हुए और हजारों-हजार युवाओं को आईटीआई के कौशल सिखाकर हुनरमंद और स्वावलंबी बनाकर वह अमर हो गए।

अपने पीछे वह पत्नी एवं पुत्र-पुत्रियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके असामयिक निधन पर उनके अग्रज प्रो. रुद्रदेव उपाध्याय सहित पूरा परिवार व शुभ-चिन्तक आहत हैं। वास्तव में स्व. उपाध्याय कोयलांचल में कौशल-विकास की दिशा में एक नई क्रांति लाकर हमेशा के लिए स्मृति शेष छोड़ गए। उनका निधन आईटीआई और समाजसेवा के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति है। उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होकर श्मशान घाट पर उन्हें श्रद्धांजलि देने वालों में बोकारो के विधायक बिरंची नारायण, प्रो. रुद्रदेव उपाध्याय, पत्रकार विजय कुमार झा, चास नगर निगम के पूर्व मेयर भोलू पासवान, समाजसेवी मनोज कुमार, कुंदन उपाध्याय, सज्जन अग्रवाल, मनोज राय, अखिलेश महतो, गुरुदास मोदक सहित सैकड़ों की संख्या में व्यवसायी व समाजसेवी शामिल थे। जबकि, उनके आवास पर जाकर परिजनों को सांत्वना देने वालों में डॉ परिन्दा सिंह व अन्य लोगों के नाम शामिल हैं।

नेतृत्व-क्षमता के विकास के लिए खेल जरूरी : प्रिय रंजन

युवाओं के बीच डालमिया भारत ने किया खेल सामग्रियों का वितरण

संवाददाता

बोकारो : डालमिया भारत फाउंडेशन के सौजन्य से स्थानीय ग्राम, गोड़ाबाली के युवाओं के बीच क्रिकेट खेल सामग्रियों का वितरण किया गया। मौके पर मौजूद डालमिया सीमेंट बोकारो के इकाई प्रमुख प्रिय रंजन के हाथों खेल सामग्रियां वितरित की गईं। उपस्थित खिलाड़ियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए अपने संबोधन में प्रिय रंजन ने कहा कि, खेल से शारीरिक, मानसिक एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। मुखिया बालेश्वर सिंह ने अपने संबोधन में डालमिया प्लांट के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि इस खेल मैदान को विकसित कर खेलने योग्य बनाने में डालमिया प्लांट का सराहनीय सहयोग रहा है। पिच का उद्घाटन फीता काटकर किया गया। खिलाड़ियों एवं उपस्थित जनसमूह की अपील पर इकाई प्रमुख और मुखिया श्री सिंह ने आपस में क्रिकेट खेले।

मौके पर डालमिया प्लांट के मानव संसाधन विभाग के प्रमुख बलराम पांडा, सुरक्षा प्रमुख सुधीर कुमार, सीएसआर प्रमुख उमेश प्रसाद, गोड़ाबाली के सरपंच जीतन रविदास, उपमुखिया सुनील महली, उत्तरी गोड़ाबाली पंचायत के सभी वार्ड सदस्य एवं अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

चेयरमैन तक पहुंचीं ठेका मजदूरों की समस्याएं

बीटीपीएस में ठेका मजदूरों की लंबित मांगों को ले डीवीसी अध्यक्ष से कोलकाता में वार्ता

समुचित कार्रवाई का दिया निर्देश

उपरोक्त मांगों के आलोक मे डीवीसी चेयरमैन ने बैठक में उपस्थित डीवीसी के सदस्य सचिव जॉन मुथाई और कार्यपालक निदेशक एचआर राकेश रंजन को समुचित कार्रवाई हेतु आवश्यक निर्देश देते हुए यूनियन महामंत्री को सकारात्मक कार्रवाई हेतु आश्वस्त किया। वार्ता में डीवीसी ठेका मजदूर संघ चंद्रपुरा से ललन शर्मा, नवीन शर्मा, बोकारो थर्मल से, मनोज कुमार सिंह, हरपाल सिंह और मैथन से कैलाश कुमार आदि शामिल थे।

संवाददाता

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा डीवीसी पावर प्लांट के ठेका मजदूर संघ की लंबित मांगों के आलोक में कोलकाता में डीवीसी चेयरमैन आरएन सिंह के साथ ठेका मजदूर संघ के महामंत्री सह भाजपा के बोकारो जिलाध्यक्ष भरत यादव ने वार्ता की।

वार्ता में यूनियन के महामंत्री ने डीवीसी के बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा पावर प्लांट में कार्यरत कैंटीन, एएमसी एवं एआरसी के ठेका श्रमिकों को तथा बोकारो थर्मल की आवासीय कॉलोनी में विद्युत मेंटेनेंस का कार्य में वर्षों से कार्यरत ठेका श्रमिकों को अन्य सप्लाई मजदूरों के समान वेतन एवं सुविधा देने, डीवीसी की विभिन्न परियोजनाओं में स्थायी प्रवृति के कार्य में वर्षों से लगातार कार्यरत कैजुअल श्रमिकों को सप्लाई मजदूरों के समान अथवा भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के द्वारा कैजुअल श्रमिकों के लिए वर्ष 2020 में जारी समेकित निर्देश के तहत वेतन एवं सुविधा देने, डीवीसी की विभिन्न परियोजनाओं- मैथन, पंचेत, कोनार डैम, हजारीबाग, तिलैया डैम, डुमरडीह में वर्षों से कार्यरत फोरेस्ट्री के श्रमिकों को बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा के फोरेस्ट्री श्रमिको के समान वेतन व भत्ता देने, मैथन में वर्षों से जलापूर्ति मे कार्यरत 21 ठेका श्रमिकों को बोकारो थर्मल के कॉलेनी वाटर सप्लाई श्रमिकों के समान वेतन व सुविधा देने, बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा में मृत सप्लाई मजदूर स्व.पति महतो और स्व.मोहन प्रसाद रवानी के आश्रित को त्रिपक्षीय समझौता का कंडिका 9 के अनुसार सप्लाई मजदूर के रूप में नियोजित करने, बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा के सप्लाई मजदूरों को त्रिपक्षीय समझौता के अनुसार स्थाई कर्मचारियों के समान सुपर स्पेशलियटी अस्पताल में चिकित्सा सुविधा देने, सेवानिवृत हो चुके सप्लाई मजदूरो को ग्रेच्युटी का भुगतान आरंभ करने, बोकारो थर्मल एवं चंद्रपुरा मे एएमसी और एआरसी के ठेका श्रमिकों को डीवीसी के खाली पड़े अथवा अनुपयोगी आवासों को तत्काल आवंटित करने, सेवानिवृत कर्मचारियों के आवास का बढ़ाया गया किराया वापस लेने आदि की मांग सिलसिलेवार तरीके से रखा।

डीवीसी चेयरमैन से श्रम शांति कायम रखने के लिए सभी लंबित मामलों का यथाशीघ्र निष्पादन करने की मांग की।

सीबीएसई शिक्षा के साथ कार्यशैली में भी बेहतरी की ओर अग्रसर : सूरज

संवाददाता

बोकारो : चिन्मय विद्यालय, बोकारो के सभागार में सीबीएसई इंटीग्रेटेड पेमेंट सिस्टम सॉफ्टवेयर की विस्तृत जानकारी एवं उसके प्रयोग की जानकारी देने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन विद्यालय के प्राचार्य सह बोकारो एवं गिरिडीह के सीबीएसई सिटी कोऑर्डिनेटर सूरज शर्मा एवं कार्यशाला की सूत्रधार अय्यप्पा पब्लिक स्कूल की प्राचार्या पी. शैलजा जयकुमार ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलन के साथ किया। पी. शैलजा जयकुमार ने कहा कि सीबीएसई इंटीग्रेटेड पेमेंट सिस्टम सॉफ्टवेयर एक माध्यम है। यह पेमेंट सिस्टम में लेनदेन की प्रक्रिया को सरल बनाता है और इसके द्वारा सीबीएसई से संबंधित कोई भी विद्यालय बहुत आसानी से पेमेंट सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकता है। उन्होंने सॉफ्टवेयर की बारीकियां एवं विशेषता को विस्तारपूर्वक बताया। इससे जुड़े सभी सवालों के जवाब भी दिए। सूरज शर्मा ने विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्यों एवं प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि कार्यशाला के माध्यम से पेमेंट संबंधी समाधान एवं जानकारी से हमलोगों को पेमेंट में काफी

सहूलियत होने वाली है। सीबीएसई शिक्षा के साथ-साथ उसकी कार्यशैली में बेहतरी को ओर लगातार अग्रसर है। नित्य नए-नए कार्य कर रही है। इससे विद्यालय प्रबंधन, विद्यालयों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा दी जा सके। कार्यशाला में एमजीएमएचएस के प्राचार्य रेजी सी. वर्गीस , एआरएस पब्लिक स्कूल के प्राचार्य विश्वजीत पात्रा, जीजीपीएस, सेक्टर- 5 के प्राचार्य सोमेन चक्रवर्ती, जीजीपीएस चास के प्राचार्य उमाशंकर सिंह सहित 40 विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, 80 से अधिक विद्यालय प्रतिनिधि रहे।

उपलब्धि भारत से चयनित छह विद्यालयों में इस्पातनगरी के स्कूल को मिला राष्ट्रीय गौरव

झारखंड में एकमात्र डीपीएस बोकारो को 7 स्टार रैंकिंग

नई दिल्ली में राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला के हाथों प्राचार्य डॉ. गंगवार को मिला पुरस्कार

संवाददाता

बोकारो : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्व-निर्वहन एवं विभिन्न अनूठे पहलों के लिए डीपीएस बोकारो को एक बार पुनः राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धि मिली है। नई दिल्ली में सेंटर फॉर एजुकेशनल डेवलपमेंट (सीईडी) फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से कौशल शिक्षा एवं सतत विकास विषय पर आयोजित सम्मेलन के दौरान विद्यालय को स्टार रेटिंग स्कूल अवॉर्ड 2022 मिला। स्कूल को ग्रीन स्कूल इनीशिएटिव की विशेष कैटेगरी में सेवन स्टार रेटिंग और ए- ट्रिपल प्लस की ग्रेडिंग मिली। विद्यालय के प्राचार्य डॉ ए. एस. गंगवार ने 8 जनवरी को सम्मेलन की मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार की महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला के हाथों यह पुरस्कार ग्रहण किया। सम्मेलन में उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री दया शंकर सिंह, एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक ऋषिकेश सेनापति, सीबीएसई के निदेशक (एकेडमिक) जी. बालासुब्रमण्यम एवं उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. जीसी त्रिपाठी, राज्य महिला आयोग (उ.प्र.) की सदस्य संगीता तिवारी सहित अन्य गणमान्य जनों की विशेष उपस्थिति रही।

उल्लेखनीय है कि देशभर से कुल 1975 विद्यालयों के आवेदनों में से केवल छह विद्यालयों को सेवेन स्टार रेटिंग मिली। इनमें झारखंड से अकेले डीपीएस बोकारो शामिल रहा। वहीं, 69 स्कूलों को फाइव स्टार रेटिंग मिली। विद्यालय में आयोजित एक विशेष असेंबली के दौरान इस राष्ट्रीय उपलब्धि की घोषणा की गई। प्राचार्य डॉ. गंगवार ने इसे समस्त विद्यालय परिवार के समेकित सहयोग व परिश्रम का प्रतिफल तथा महत्वपूर्ण गौरव बताया।

हफ्ते की हलचल

सुरेश श्रीनिवासन ने वेदांता -ईएसएल के कर्मियों को किया प्रेरित

बोकारो : वेदांता-ईएसएल ने अपने कर्मचारियों के लिए स्टॉप लुक गो एंथुसियास्टिक विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसका संचालन प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता और कारपोरेट ट्रेनर सुरेश श्रीनिवासन ने किया। सुरेश ने सत्रों में जीवन और करियर व्यतीत करने के लिए अपनाए जाने वाले विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा की। उन्होंने उल्लेख किया कि स्वास्थ्य, संपत्ति, मित्र और परिवार, करियर, आध्यात्मिकता, आदि हमारे जीवन की गाड़ी के पहिये हैं, जिसे संतुलित रखने से हमें जीवन को बेहतर ढंग से जीने में मदद मिलेगी। कार्यशाला में आशीष गुप्ता (सीईओ, ईएसएल), खिरोद कुमार बारिक (सीएचआरओ, ईएसएल), अनरित मुखर्जी (निदेशक, सेंट्रल इंजीनियरिंग) के साथ कंपनी के 400 से अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया। सुरेश श्रीनिवासन ने कर्मचारियों को अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

जरीडीह बाजार में दामोदर किनारे लगा मेला

बेरमो : जरीडीह बाजार स्थित दामोदर के तट पर मकर संक्रांति के अवसर मेला का आयोजन हुआ। गांधीनगर के थाना प्रभारी अनूप कुमार, समाजसेवी सह झामुमो नेता अनिल अग्रवाल मुखिया कंचन देवी, पंचायत समिति सदस्य, पिंकी देवी ने संयुक्त रूप से मेले का शुभारंभ किया। इस मेले में जरीडीह बाजार के अलावा गांधीनगर, संडे बाजार, चार नंबर, बेरमो स्टेशन, पेटरवार प्रखंड के चलकरी, खेतको, झिझको सहित आसपास के गांव के हजारों लोगों की भीड़ देखी गई। श्रद्धालुओं ने स्थानीय दामोदर नाथ महादेव मंदिर में पूजन-अर्चन कर ड्रैगन झूला सहित विभिन्न प्रकार के झूले का आनंद उठाया। विधि-व्यवस्था बनाने के लिए को लेकर गांधीनगर पुलिस मुस्तैद रही। मौके पर बबलू भगत रॉबिन कसेरा, पप्पू साहनी, टिंकू पंडित, विक्रम राम, जैकी सिंह, सचिन कुमार, प्रेम कुमार, विनय साहू सहित कई लोग उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान की समृद्धि के लिए हिन्दी का उपयोग जरूरी : पांडेय

बोकारो : दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र (सीटीपीएस) प्रबंधन की ओर से आयोजित विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। सीटीपीएस की इकाई 7 - 8 के सम्मेलन कक्ष में आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय, मुख्य अभियंता (प्रचालन एवं अनुरक्षण) देवव्रत दास, उपमुख्य अभियंता केके सिंह, अधीक्षण अभियंता दिलीप कुमार, संयुक्त निदेशक एके चंद्रशेखर, उपप्रबंधक उपेंद्र मंडल, सहायक प्रबंधक अनिल कुमार सिंह आदि ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि विश्व में हिंदी भाषा के आदान-प्रदान से लोग एक दूसरे को समझने और जानने में सहायता करते हैं। विश्व हिंदी दिवस बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। हिंदी भाषा सुलभ है। इसकी उपयोगिता से समृद्धि भी आती है।

लोहड़ी पर गोमिया गुरुद्वारे में शबद कीर्तन का आयोजन

गोमिया : आईईएल, गोमिया स्थित गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में संगत की ओर से लोहड़ी धूमधाम से मनाया गया। सबसे पहले प्रातः जप जी साहिब के पाठ की समाप्ति के तत्पश्चात शबद कीर्तन किया गया। फिर गुरुद्वारे के ग्रंथी बाबा लाल सिंह ने अरदास कर भोग प्रसाद का वितरण किया। इस मौके पर गुरुद्वारे में लंगर भी आयोजित हुआ, जिसमें खिचड़ी प्रसाद वितरण गया। मौके पर गुरुद्वारा कमेटी के सचिव राजेंद्र सिंह सलूजा, खजांची बलबीर सिंह, सेवा सिंह पुरी, रणजीत सिंह, चरणजीत सिंह रखड़ा, युवा समाजसेवी सूरजलाल सिंह, मंजीत सिंह सलूजा, हरमीत कौर, सत्या आहूजा, परमजीत कौर, सुरेन्द्र कौर, हरमन खनूजा, परमजीत कौर, भूपिंदर सिंह सलूजा, रोमा सलूजा, जसविंदर सिंह, सुरजीत सिंह मोंटी, खनूजा सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

झारखंड में **सड़क सुरक्षा बस दिखावा...** इधर सड़क हादसों में भारी इजाफा, उधर ट्रैफिक सुधारने की बजाय राजस्व बटोर रही पुलिस

हिफाजत कम, वसूली ज्यादा

कार्यालय संवाददाता
रांची/धनबाद/बोकारो : हर साल की भांति इस बार भी पूरे प्रदेश में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया जा रहा है। जिला प्रशासन से लेकर विभिन्न संगठनों के लोग सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरुक कर रहे हैं। पुलिस की ओर से यह सिलसिला जारी है, लेकिन कड़वा सच यही है कि यहां रोड सेफ्टी केवल दिखावा ही बनकर रह गया है। यह तब तक बना रहेगा, जब तक पुलिस की ओर से लोगों की हिफाजत से ज्यादा लक्ष्य-पूर्ति के लिए राजस्व वसूली को प्राथमिकता देना बंद नहीं होगा। साथ ही, सड़क सुरक्षा समिति की बैठकों में लिए गए निर्णयों को धरातल पर जब तक नहीं उतारा जाता, लोग यूं ही सड़क हादसों में अपनी जान गंवाते रहेंगे।

अभी आलम यह है कि पुलिस के जवान हेलमेट पहने होने तथा सीट बेल्ट लगाए जाने के बावजूद कोई न कोई कारण बताकर या यूं ही बड़े चालान का भय दिखाकर नए साल का खर्चा जुटाने में लगे हैं। बोकारो में सेक्टर-3 निवासी डी. चक्रवर्ती ने बताया कि एक दिन वह तेलमच्चो पुल के पास से आ रहे थे। रास्ते में कुछ जवानों ने उन्हें रोक लिया। जबकि उन्होंने सीट बेल्ट पहन रखी थी। एक जवान ने जबरन उनसे कहा कि पुलिस को देखने पर उन्होंने बेल्ट पहनी। बात बढ़ती गई, मामला 500 रुपए बतौर हर्जाना देने पर शांत हुआ। जाहिर है, ऐसे में हिफाजत और सेवा ही लक्ष्य का नारा कहीं न कहीं धूमिल होता दिख रहा है।

2021 में 235, तो 2022 में 300 सड़क हादसे

आमलोगों का कहना है कि ट्रैफिक व्यवस्था को व्यवस्थित करने की बजाए यातायात पुलिस का ध्यान सिर्फ जुर्माना वसूलने में लगा रहता है, जिसकी वजह से लगातार सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि देखने को मिल रही है। पहले चास-बोकारो सहित रांची, धनबाद के सभी चौक-चौराहों पर ट्रैफिक पुलिस तैनात रहती थी, जो हमेशा वाहनों पर नजर रखती थी, कोई गलत दिशा में तो नहीं जा रहा। किसी ने बीच सड़क पर ही गाड़ी खड़ी तो नहीं दी। फिलहाल चौक-चौराहों पर पुलिस तो दिखती है, लेकिन सिर्फ यह देखने में कि कौन बिना सीट बेल्ट लगाए चार पहिया चला रहा है और कौन बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चला रहा है। ऐसे में तेज रफ्तार में वाहन चलाने या गलत दिशा से चौराहे को पार करने पर रोक नहीं लगती, जिसकी वजह से सड़क दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। आधिकारिक जानकारी के अनुसार बोकारो में जनवरी से नवंबर 2021 तक में 235 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। वहीं, 2022 में उसी अवधि में यह बढ़कर 300 हो गई। जनवरी से नवंबर 2022 के बीच सड़क दुर्घटनाओं में कुल 184 लोगों की मौत हो चुकी है।

2048 वाहनों से 59.21 लाख रुपए की वसूली

वर्ष 2022 में 2048 विभिन्न तरह के वाहनों से बोकारो जिले में 59,21,150 रुपए जुर्माना के रूप में पैसे की वसूली की गई। वित्तीय वर्ष 2021-22 में 81,39,045 रुपए की वसूली जुर्माना के रूप में हुई थी। जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 के पूरे होने में अभी तीन महीने बचे हुए हैं। इसके बावजूद नवंबर तक 59,21,150 रुपए जुर्माने के तौर पर वसूली गई। यकीनन, ट्रैफिक नियम तोड़ना गलत है और इसके लिए जुर्माना वसूलना गलत नहीं, परंतु इसके साथ दुर्घटनाओं को रोकने के लिए यातायात पुलिस को विशेष सतर्क रहने की भी जरूरत है।

अवैध कटिंग आज तक बंद नहीं, 184 लोगों की गई जान

चास-बोकारो में जिन जगहों पर ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं, उसमें कुर्रा मोड़, आईटीआई मोड़, जेल मोड़, भूतनाथ मंदिर, पुलिस लाइन, सिवनडीह, रेल फाटक, स्कूल बालीडीह, जैनामोड़-बहादुरपुर, काली मंदिर बहादुरपुर के नाम शामिल हैं। पिछली बार हुई सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में यह कहा गया कि एनएच-23 में 18 जगहों और एनएच-32 पर पांच अवैध कटिंग हैं, जिन्हें बंद करना नितांत जरूरी है। वहीं, चास के आईटीआई मोड़, जैनामोड़, पेटरवार-तेनु चौक, जोधाडीह मोड़, पुलिस लाइन, रेलवे फाटक, स्कूल बालीडीह और फुसरो चौक में डिस्पले बोर्ड लगाया जाए, ताकि दुर्घटनाओं में कमी लाई जाए। लेकिन, आजतक ऐसा नहीं हो सका। ट्रैफिक लाइट जहां लगी भी है, वह जलती नहीं। इन सुरक्षात्मक उपायों के प्रति लापरवाही का ही शायद नतीजा है कि 2022 में 300 सड़क हादसों में 184 लोगों की असमय मौत हो गई। इध, ट्रैफिक डीएसपी पूनम मिंज का कहना है कि विभाग में जवानों की काफी कमी है, जिसके कारण उनकी समुचित और पर्याप्त तैनाती नहीं हो पाती। बोकारो शहर होकर गुजरी चास-नयामोड़ सड़क काफी व्यस्त मानी जाती है। उस सड़क पर डीसी कार्यालय मोड़ पर ट्रैफिक लाइट, हवाई अड्डा मोड़, सेक्टर-12 मोड़, नयामोड़ पर ट्रैफिक लाइट लगना था। डीसी कार्यालय मोड़ पर लगी सोलर ब्लिंकर नहीं जलती है। बाकी स्थानों पर लाइट नजर नहीं आती। जबकि इस सड़क पर अक्सर हादसे होते है। दोपहिया वाहन चलाने वालों की लगातार चेकिंग होगी। पेट्रोल पंपों के संचालकों को निर्देश दिया गया था कि बिन हेलमेट बाइक चलाने वालों को पेट्रोल नहीं देंगे। कुछ दिन तो सख्ती दिखी। उसके बाद फिर पुरानी व्यवस्था चालू हो गई। पंप में बगैर हेलमेट का भी पेट्रोल मिल रहा है।

मंत्री ने की राजस्व संबंधी कार्यों की समीक्षा, प्रगति पर अधिकारियों को दी बधाई

सतीश कुमार झा
सीतामढ़ी : मंत्री राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग आलोक मेहता की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित परिचर्चा भवन में राजस्व से संबंधित समीक्षात्मक बैठक की गई। बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए मंत्री श्री मेहता ने कहा कि सभी राजस्व अधिकारी आम जनता के हित के मद्देनजर राजस्व संबंधी कार्यों में तेजी लाएं। सभी पदाधिकारी निर्धारित समय सीमा के अंदर मामलों का निष्पादन करना सुनिश्चित करें। अधिकारीगण अपने कर्तव्य और जवाबदेही को समझें, ताकि आम आवाम को इसका लाभ मिल सके एवं भूमि संबंधी मामलों का त्वरित निष्पादन हो सके। बैठक में जानकारी दी गई कि राज्य स्तर पर जिला का रैंकिंग सातवां है। विगत 6 माह में विभागीय निर्देश के आलोक में जिला स्तरीय पदाधिकारियों के द्वारा पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया गया। परिणाम स्वरूप राजस्व संबंधी कार्यों में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है और जिले को राज्य की रैंकिंग में सातवां स्थान प्राप्त हुआ। राज्य के टॉप 50 अंचलों में सीतामढ़ी के तीन अंचल क्रमशः बाजपट्टी, मेजरगंज और परिहार भी शामिल हैं। सीतामढ़ी जिले की रिपोर्ट देखकर मंत्री श्री मेहता ने काफी प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही कहा कि विभाग द्वारा प्राप्त दिशा-निर्देश के आलोक में जिलाधिकारी एवं अपर समाहर्ता, राजस्व सहित अन्य पदाधिकारियों का कार्य के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता के कारण सीतामढ़ी जिला ने जो उपलब्धि हासिल की है, इसके लिए जिला पदाधिकारी एवं अपर समाहर्ता सहित संबंधित सभी पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। बैठक में अपर समाहर्ता मनीष शर्मा ने लंबित ऑनलाइन म्यूटेशन प्रतिवेदन, जिला की रैंकिंग, परिमार्जन, भू-स्वामित्व प्रमाण पत्र, अतिक्रमण की संख्यात्मक विवरणी, आमीन नापी, अभियान बसेरा, सैरात से संबंधित प्रतिवेदन, लगान वसूली प्रतिवेदन से संबंधित अद्यतन प्रगति की जानकारी दी गई। मंत्री ने कहा कि वास भूमि रहित भूमिहीनों को भूमि उपलब्ध कराकर मॉडल कॉलोनी के रूप में निर्माण कराया जाएगा। एक वर्ष के अंदर कोई भी वास रहित भूमिहीन नहीं रहेगा। बैठक में उन्होंने सभी अंचलों से आये 114 वासीगत पर्चा लाभार्थी को पर्चा उपलब्ध कराया। बैठक में जिला पदाधिकारी मनेश कुमार मीणा, उप विकास आयुक्त विनय कुमार, अपर समाहर्ता मनीष शर्मा, अनुमंडल पदाधिकारी सीतामढ़ी सदर राकेश कुमार, डीसीएलआर सदर धनंजय कुमार, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी, डीसीएलआर बेलसंड के साथ सभी अंचलों के अंचलाधिकारी उपस्थित थे।

सतत विकास एवं भविष्य में विज्ञान की भूमिका पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करेगा एलएनएमयू

दरभंगा : ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय (एलएनएमयू) आगामी मार्च महीने में सतत विकास एवं भविष्य के निर्माण में मीडिया की भूमिका पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करने जा रहा है। यूनेस्को ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) 2030 एजेंडा, बेहतर स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन और सबके लिए शांति और समृद्ध जीवन सुनिश्चित करने के लिए इस वर्ष को समावेशी विकास लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बुनियादी विज्ञान का अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया गया है। यूनेस्को का उद्देश्य बेसिक साइंस के महत्व को सतत विकास लक्ष्य के महत्व से दुनिया को अवगत कराना है। इसी की तहत रसायन विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय अपने कुलपति प्रो एसपी सिंह के संरक्षण में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन एसोसिएशन ऑफ केमिस्ट्री टीचर्स मुंबई के सहयोग से 27-28 मार्च 2023 को करेगा। इसका शीर्षक - 'रोल ऑफ बेसिक साइंसेज फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर' होगा।

इसी क्रम में विश्वविद्यालय रसायन विज्ञान विभाग में कॉन्फ्रेंस की विवरणिका का विमोचन विभागाध्यक्ष प्रो. प्रेम मोहन मिश्रा की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि प्रतिकुलपति प्रो. डॉली सिन्हा, विशिष्ट अतिथि प्रो. राजकुमार साहू, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय एवं प्रोफेसर अजय कुमार दास, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, सहरसा पीजी कॉलेज ने संयुक्त रूप से विमोचन किया। कार्यक्रम में डॉ. सियाराम प्रसाद, डॉ. निशा सक्सेना, डॉ. एसके गुप्ता, डॉ. आनंद मोहन झा एवं विभागीय छात्र-छात्राएं मौजूद थे। अध्यक्ष रसायन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने सेमिनार के विषय एवं उद्देश्य से अवगत कराया। कांफ्रेंस के मुख्य संयोजक प्रो. संजय कुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष प्रो. कुशेश्वर यादव एवं उपसंयोजक डॉ. विकास कुमार सोनू, संयोजक सचिव डॉ. अभिषेक राय एवं डॉ. आकांक्षा उपाध्याय तथा समन्वयक शशि शेखर झा होंगे।

ज्ञान, तेजस्विता व बुद्धि प्रदायक सूर्यदेव !

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने।
आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं तेजस्तेषां च जायते।।

अर्थात प्रातः काल सूर्य को अर्ध्य प्रदान कर प्रणाम करने से आयु, प्रज्ञा, बल, वीर्य और तेज बढ़ता है।

ग्रहाधिपति तो सूर्य ही हैं और सूर्य के चारों ओर सभी ग्रह परिभ्रमण करते हैं। इसीलिए वेदों में भी सूर्य को सबसे अधिक प्रधानता दी गई है।

यह सूर्य ही समस्त जगत के जड़-चेतन की आत्मा हैं। सूर्य ही नेत्र स्वरूप हैं। सूर्य का बल मित्रदेव वरुण देव और अग्नि देव हैं। सूर्य ही आकाश, पृथ्वी और अंतरिक्ष लोक को धारण करने वाला ग्रहराज है और यह सर्वत्र व्याप्त है। यह सूर्य ना कभी उदय होता है और ना कभी अस्त होता है। हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। इसलिए हमें दिन और रात का अनुभव होता है। सूर्य तो स्थिर ग्रहराज हैं।

सूर्य को ज्योति स्वरूप ग्रह कहा गया है, स्व-प्रकाशित। इसके प्रकाश से ही अन्य सारे ग्रह प्रकाशित होते हैं, हमें दृश्यवान होते हैं। सूर्य नहीं तो जगत में प्रलय, जगत की समाप्ति।

जिस प्रकार ब्रह्मांड में सूर्य ज्योति स्वरूप है और सूर्य को परमात्मा का स्वरूप कहा गया है, ब्रह्म का स्वरूप कहा गया है, ठीक वैसे ही ज्योति प्राणी के शरीर में, मनुष्य के शरीर में भी होती है और यह भी स्व-प्रकाशित है। यह ब्रह्म की ज्योति उसे जगत में आलोकित करती है, प्रवाहवान बनाती है, आभावान बनाती है और इसका प्रत्यक्ष रूप हमारे नेत्र हैं, जिसके माध्यम से हम इस जगत को देखते हैं।

गुरु जब शिष्य को दीक्षा प्रदान करते हैं तब वह शिष्य के नेत्रों में देखते हैं। इसका अर्थ है शिष्य के सूर्य के स्वरूप को दृष्टिपात करते हुए उसकी प्राण-ज्योति, आत्म ज्योति स्वरूप सूर्य को जागृत करते हैं, जिससे वह अपनी स्वयं की अग्नि से, प्राण ज्वाला से निरंतर और निरंतर प्रज्वलित रहे और स्वयं अपने प्रयास से, अपने विगत जीवन के कर्म दोषों को भस्मीभूत कर सके और इस जीवन में अपने स्व-प्रकाश के द्वारा सृष्टि में अपना कार्य श्रेष्ठ रूप से संपन्न कर सके।

इसीलिए यह कहावत कही गई है कि, जब कोई व्यक्ति उन्नति करता है तो कहते हैं, आपके जीवन में तो सौभाग्य का सूर्य उदीयमान हो गया है।

वेदों में उल्लेख आया है कि-

अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निर गुंग हसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्ता मदितिः सिन्धु पृथिवी उतद्यौः।।

हे सूर्यदेव! आज का सूर्योदय हमारे दोषों को नष्ट करें। हमारे अपयश को दूर करें और आपके सहयोगी मित्र वरुण, अदिति माता, सिन्धु, पृथ्वी, आकाश सभी हमारी रक्षा करें।

ध्यान देने वाली बात है कि सूर्य के सहयोगी ग्रह हैं वरुण देव और वरुण का अर्थ है- जल। इसीलिए सूर्योदय के समय सूर्य को जल का अर्घ्य प्रदान किया जाता है और वह भी खुले आकाश में, धरती पर खड़े होकर, जिससे पृथ्वी, आकाश, सूर्य और वरुण का मिलन हो। इसीलिए सूर्य ग्रहण के समय और मकर संक्रांति के दिन तीर्थों में स्नान करने का विशेष महत्व है।

खगोल शास्त्री कहते हैं कि सूर्य इस दिन अपनी कक्षा में परिवर्तन कर दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है। इसीलिए इसे मकर संक्रांति कहा गया है। संक्रांति का सीधा अर्थ है सूर्य जिस राशि में जाता है, उसे संक्रमण कहा गया है। तो पूरे वर्ष में हर महीने की 14 तारीख के आसपास संक्रमण काल आता है, जब एक-एक कर राशियां सूर्य की कक्षा में भ्रमण करती हैं।

मकर संक्रान्ति का महत्व

इस भ्रमण सिद्धांत का विशेष आध्यात्मिक अर्थ है। मकर संक्रांति तो सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस दिन से ही यह माना जाता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर परिवर्तन हो रहा है। मकर संक्रांति से ही दिन बड़े और रात्रि छोटी होने लगती है। निश्चित रूप से दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा और रात्रि छोटी होने से अंधकार की अवधि कम हो जाएगी। जितना अधिक सूर्य चमकेगा, प्राणी जगत में भी उसी अनुरूप में चेतनता और कार्य शक्ति में वृद्धि हो जाती है। आप सुबह जल्दी उठने लगते हैं, देर शाम तक कार्य कर सकते हैं।

कर्म के संबंध में एक सिद्धांत है- नेचुरल लाइट अर्थात सनलाइट में कार्यक्षमता में दोगुनी वृद्धि हो जाती है। जिस व्यक्ति का घर भी सूर्य के प्राकृतिक प्रकाश से अधिक प्रकाशित रहता है, उस घर में कीटाणु, विषाणु नहीं पनपते हैं, परिवार के सदस्यों में आरोग्यता रहती है।

मकर संक्रान्ति की धार्मिक मान्यता

मकर संक्रांति पर्व की आध्यात्मिक मान्यता के साथ-साथ यह धार्मिक मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन समस्त देवी-देवता पृथ्वी पर अपना स्वरूप बदलकर स्नान के लिए आते हैं, तीर्थ क्षेत्र में आते हैं। इस पौराणिक मान्यता के आधार पर ही लोग तीर्थों में स्नान करते हैं। साधकों को भी उस दिन प्रातः उदीयमान उषा रूपी सूर्य के स्नान कर दर्शन अवश्य करने चाहिए और उन्हें जल अर्घ्य अवश्य प्रदान करना चाहिए।

कैसे करें सूर्य को प्रबल?

यह प्रश्न ऋषियों ने भी वेदव्यास को पूछा था कि, सूर्य क्या है? तब वेदव्यास जी ने कहा- यह ब्रह्म के स्वरूप को प्रकट करता हुआ ब्रह्मा का ही उत्कृष्ट तेज है और यह सूर्य ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और सभी पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला है।

शरीर के भीतर-बाहर और समस्त विश्व में सूर्य की ही सत्ता है। सूर्य ने ही इस जगत को धारण किया हुआ है। सूर्य से ही रूप और गंध उत्पन्न होते हैं। रसों में स्वाद है, वह सूर्य से ही आया है।

सूर्य प्रबल होता है मनुष्य के भाव से, विचार से, दृष्टि से और सत्य से। जिस मनुष्य के विचार सत्य पर आधारित होते हैं और भाव प्रबल होते हैं, वह सूर्य के साथ अपनी आत्मा को, अपने भीतर को, अपने प्रकाश को जोड़ लेता है। जो मनुष्य सूर्य के साथ अपनी ज्योति को नहीं जोड़ता, उसकी स्वयं की ज्योति धीरे-धीरे मंद होने लगती है, क्योंकि वह स्रोत से विमुख हो गया होता है।

देव तो आराधना, साधना से ही प्रसन्न होते हैं। निरंतर आराधना, निरंतर उपासना शरीर और मन में शुद्धि लाती है। इससे प्राण ज्योति पर छाई हुई कालिमा समाप्त हो जाती है और जैसे ही यह कालिमा समाप्त होने लगती है, मनुष्य अपने भीतर के सूर्य को प्रबल कर स्वतेज से युक्त हो जाता है।

सूर्य की उपासना की हजारों विधियां हैं, लेकिन सूर्य को अर्घ्य तो नियमित रूप से देना ही चाहिए और सूर्य को लालिमा प्रसन्न करने वाली होती है, इसीलिए जल के साथ लाल पुष्पों का अर्घ्य देना चाहिए। जो व्यक्ति सूर्योपासना नहीं करता है, वह तेजहीन हो जाता है, व्याधि ग्रस्त हो जाता है, नेत्र ज्योति मंद हो जाती है, सदैव अप्रसन्न रहने वाला कुंठाग्रस्त व्यक्तित्व बन जाता है।

इसीलिए सद्गुरुदेव सदैव अपने प्रवचनों में कहते हैं कि- हे साधक! तुम्हारे भीतर भी एक आत्मज्योति है, उस आत्मज्योति का तुम आह्वान करो, उस आत्म-ज्योति को तुम प्रबल करो। संसार की सारी बाधाएं तुम्हारे द्वारा ही तुमसे भस्म हो जाएंगी।

सूर्य का उत्तरायण में प्रवेश पाप-ताप-संताप मुक्ति

मनुष्य की प्रवृत्ति है कि उसे परोक्ष से अधिक विश्वास प्रत्यक्ष में होता है और सूर्यदेव से अधिक प्रत्यक्ष अन्य कोई देव नहीं हैं। महर्षि अगस्त्य ने सूर्यदेव की महिमा बताते हुए कहा है कि, अनंत किरणों से सुशोभित, देवताओं और असुरों द्वारा नमस्कृत, कश्यप ऋषि और अदिति के पुत्र आदित्य और समस्त संसार के स्वामी सूर्यदेव ही हैं।

मार्कण्डेय पुराण में सूर्यदेव को ब्रह्म का रूप माना गया है। निराकार ब्रह्म शाब्दिक रूप में ***ऊँकार*** के रूप में अभिव्यक्त होते हैं और सूर्यदेव के रूप में शरीरगत (देह) रूप में अभिव्यक्त होते हैं। सूर्यदेव को आदिदेव कहा गया है और हिन्दू संस्कृति में श्रीगणेश, शिव, शक्ति, विष्णु और सूर्य आदि देव भगवान के ही पांच प्रमुख पूज्य रूप हैं।

सूर्य साधना उपासना से आरोग्य, प्रखर नेत्र ज्योति, समाज में मान-सम्मान, धनधान्य की अनवरत आवक और वृद्धि तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। सूर्य साधना के माध्यम से साधक जहां एक ओर अपने दुर्भाग्य का नाश करने में समर्थ हो, वही सूर्य साधना की गरिमा को भी आत्मसात कर सके और कदाचित ऐसे ही गंभीर साधक आगे बढ़कर गुरु चरणों में अपने जीवन को निवेदित कर इस साधना को संजो लेने का प्रयास करते हैं।

सूर्य-कृपा से ही दुर्भाग्य का नाश

दुर्भाग्य का नाश सूर्य के अतिरिक्त किसी अन्य देवी-देवता के वश की बात ही नहीं है। यह तो पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा अपने शिष्यों को दी गई एक दुर्लभ भेंट है। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक तो वही हो सकता है, जो मकर संक्रांति के शुभ मुहूर्त में दुर्भाग्य नाश की सूर्य साधना को संपन्न कर लेता है।

मकर संक्रांति का दिवस प्राचीन परंपरा से ही सूर्य पूजन का दिवस माना गया है, किंतु इस दिन केवल सूर्य पूजन करने के स्थान पर यदि इस साधना को संपन्न कर लिया जाए तो साधक माह भर बीतते-बीतते स्वयं अनुभव कर सकता है कि वास्तव में भारतीय साधना की परंपरा कितनी अधिक प्रखर रही है। मकर संक्रांति के अवसर पर सूर्य साधना का लोक व्यवहार में सदा से महत्व रहा है, अंतर केवल इतना है कि जहां सामान्य व्यक्ति केवल पूजन के द्वारा अपनी श्रद्धा भावना भगवान सूर्य को निवेदित करते हैं, वहीं साधक उनके वरदायक प्रभाव को किसी विशेष साधना के द्वारा अपने शरीर में उतारने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन के विविध दोष और जड़ताएं समाप्त हो सकें।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य में सुधार। जीवन सुखमय एवं आनन्ददायक गुजरेंगे। बुरे कर्म वाले लोगों से दूरी बनाएं। विद्यार्थी वर्ग की शिक्षा में सुधार होगा। धनागम के योग बनेंगे। वाणी पर संयम रखें।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य में थोड़ी परेशानी हो सकती है। रुके हुए धन के प्राप्ति के योग बनेंगे। प्रतिष्ठित लोगों से लाभ प्राप्त हो सकती है। कार्यों की सफलता में देर होगी। दाम्पत्य जीवन में थोड़ी कड़वाहट होगी।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। धनागम के योग बनेंगे। राज्याधिकारियों से मुलाकात होगी। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं पर विजय। कर्तव्य निर्वहन में सावधानी बरतें।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - सप्ताह के शुरू में स्वास्थ्य थोड़ा बिगड़ेगा लेकिन सप्ताहांत तक सुधार होंगे। स्त्री से रिश्ते बिगड़ेंगे विवाद से दूर रहें। शत्रुओं पर विजय। बुद्धि में भ्रम पैदा होगा। पति या पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य लाभ। स्त्री से विवाद होंगे। प्रेमादि में व्यर्थ का समय नही गवाएं। शत्रुओं पर विजय होगी। किसी भी कार्य को सोच विचार कर ही निर्णय लें। मानसिक सुख प्राप्त करेंगे।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - इस सप्ताह मन प्रसन्न रहेगा। पदोन्नति या व्यवसाय में वृद्धि होगी। विद्यार्थीवर्ग को सफलता मिलेगी। चल सम्पति सम्बन्धी निर्णय सोच-विचारकर लें। शत्रुओं पर आसानी से विजय। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती हैं।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। सुख-आनन्द की प्राप्ति होगी। मनोरंजन की योजनाएं बनेंगी। नेत्र-कष्ट हो सकते हैं। वाहनादि के योग बनेंगे।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - स्वास्थ्य में थोड़ी सुस्ती महसूस करेंगे। स्वजनों से मनमुटाव होंगे। संगीत से लगाव बढ़ेंगे। वाणी पर संयम रखें। मानसिक चिंताएं बढ़ सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - मन चंचलता से भरा होगा। निर्णय लेने में असावधानी नही बरतें। साहस में बढ़ोतरी होगी। वाणी पर संयम रखें। धन की प्राप्ति हो सकती है। विद्या की बढ़ोतरी होगी। स्त्री-सुख मिलेगा। गायन-वादन में रुचि बढ़ेगी।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - ज्वर अथवा रक्त-विकार सम्बन्धी समस्या ही सकती है। शत्रुओं का नाश होगा। मित्रों से सहायता व्यावसायिक लाभ मिलेगा। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नेत्र सम्बन्धी समस्या हो सकती है। पदोन्नति के योग बनेंगे। पिता को धन लाभ।भोजन से अरुचि हो सकती हैं। विद्यार्थी मेहनत करें तो ही सफलता प्राप्त होगी।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। श्वांस, खांसी हो सकते हैं। जल सम्बन्धी व्यवसाय से लाभ प्राप्त होंगे। मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से मुलाकात होगी। मन में बेचैनी हो सकते। हैं।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें– 7808820251

बदल गया मकर संक्रांति और उत्तरायण का इतिहास

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण

दुल्हिन! हे दुल्हिन! सुनैछी, मामा ने मां को हांक लगाते हुए कहा।
जी सरकार जी।
पंद्रह तारीख के तिलसकरात हई त तिल, मुढ़ी आ चिउरा के लाई आई बनतई, से है न याद? आ ओहि दिन से सूरज भी उत्तरायण होथिन त पंडित जी से होम करवायल जतई। रमेसरा के कहवइ, जे आइये हुनका न्योत अतई आ ओने से लौटे बेरिआ दान करे वाला सामान भी लिख के दे देवई, लेले आयत।
ठीक हई सरकार जी, वही करवई।
'क्या बात हो रही है सास-पुतोह के बीच', बाबा ने आंगन में प्रवेश करते हुए पूछा।
कुछ नहीं बाबूजी, बस ऐसे ही। 15 तारीख को तिलसकरात है न और सूर्य भी उत्तरायण हो रहे हैं, इसलिए मां ने हवन सामग्री और दान सामग्री मंगवाने और पंडित जी को आज ही न्योता भेजवा देने के लिए कहा है।
रमेसर को आपने देखा है क्या बाबूजी?
क्यों क्या हुआ? बाबा ने पूछा।
कुछ नहीं, बस उसे पंडित जी के यहां भेजना था और बाजार से कुछ सामान मंगवाना था। अरे बहू, पहले जरा बैठ जाओ और सुनो।
15 तारीख को मकर संक्रांति तो है, लेकिन सूर्य का उत्तरायण होना नहीं है।
क्या मतलब बाबूजी? ऐसा कैसे?

उत्तरायण : शास्त्र में उत्तरायण को देवताओं का दिन कहा गया है। उत्तरायण के लिए शास्त्र में एक शब्द प्रयोग में आया है और वह है 'उद्गायन'। देखो- इसके लिए सायण और निरायण को समझना होगा।
बाबूजी ये सायण और निरायण क्या है?
बेटा इसको सरल भाषा में समझो, जब सूर्य के भ्रमण का आरंभ किसी नियत स्थान से माना जाय तो निरायण और जब सूर्य के भ्रमण का कोई नियत स्थान न हो, वरन् वह गतिशील हो तो वह सायण कहलाता है। हमारे पूर्वज बहुत ही अच्छे तरीके से जानते थे कि कब सायण गणना करनी है और कब निरायण गणना करनी है। उत्तरायण की गणना के लिए सायण और संक्रांति की गणना के लिए निरायण विधि का इस्तेमाल करते थे। महर्षि लगध के समय में सूर्य का उत्तरायण धनिष्ठा नक्षत्र में हुआ था जो कि मकर और कुम्भ राशि का मिलन स्थल है। वराहमिहिर के समय में यह पूर्व आषाढ़ नक्षत्र में हुआ और वर्तमान में उत्तरायण का नक्षत्र है मूल? वराहमिहिर बहुत स्पष्टता से लिखते हैं कि सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से पहले यदि सूर्य उत्तर हो जाते हैं तब और सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के बाद सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं तब इसका देश, दुनिया के मौसम पर क्या प्रभाव होता है।
इसलिए, मकर संक्रांति और उत्तरायण दोनों भिन्न हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। नक्षत्रों का यह पीछे खिसकना क्यों हो रहा है, ये भी जानिए। पृथ्वी के इक्वेटर और ध्रुव पर सूर्य और चन्द्रमा का गुरुत्व बल लगने की वजह से 72 वर्षों में एक दिन का खिसकाव हो जाता है। सूर्य और चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल अन्य ग्रहों की तुलना में पांच सौ गुना ज्यादा है।

उत्तरायण का महत्व भी जानिए दुल्हिन

महाभारत काल - सभी जानते हैं कि पितामह भीष्म अपना प्राण त्यागने के लिए सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। भीष्म तो कभी भी प्राण त्याग सकते थे, पर उन्होंने उत्तरायण की प्रतीक्षा क्यों की बाबूजी?
बड़ा गूढ़ है इसका सन्देश दुल्हिन। इस समय से सूर्य के ताप में वृद्धि होने लगती है। जीवनदायिनी रश्मियों का प्रवाह प्रवाल होने लगता है। परिणाम हमारा जीवन प्रबल से प्रबलतम की तरफ जाने लगता है। इसके पहले चातुर्मास बीत रहा होता है। कड़ाके की ठंड पर रही होती है। जीवनी शक्ति क्षीण होती है, कमजोर होती है तो कमजोर पड़े समय में तो जीवन त्याग कोई भी कर सकता है। महानता तो तब है न कि जब जीवन अपने प्रबलतम रूप में हमारे सामने खड़ा हो और हम कहें कि जा जीवन अब हमें तुम्हारी जरूरत नहीं, अब मैं तुम्हे त्यागूंगा।

मकर संक्रांति - सूर्य के धनु राशि से मकर राशि में गोचर का पहला दिन मकर संक्रांति कहलाता है।
मकर संक्रांति में सूर्य आकाश में धनु राशि के तारों से मकर राशि के तारों की ओर खिसकता जान पड़ता है। ज्योतिष में सूर्य का यह निरायण खिसकाव हो रहा है। सायण खिसकन दिसम्बर 22 को हो चुकी है। सूर्य का यह सायण खिसकाव उत्तरायण कहलाता है।
अच्छा बेटी ये बताओ कि समझ में आया न कि कल सिर्फ मकर संक्रांति है, सूर्य का उत्तरायण होना नहीं है।
जी बाबूजी।
और बाबा मेरे दिमाग का बत्ती भी भुक्क से जल गयी, नंदी जो मां की गोद में इतने देर से चुप बैठी थी, हंसते हुए बोल पड़ी।
सिर्फ बत्तिये जली, कि दिमाग में कुछ रोशनी का प्रवेश भी हुआ, बाबा ने भी रस लेते हुए कहा।
हां बाबा दिमाग में कुछ रोशनी भी घुसी है, नंदी ने भी बाबा से लाड़ जताते हुए कहा।
मकर संक्रांति का स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्व को जानिए दुल्हिन। यहां ज्योतिष हमारा प्रवेश लोक में कराता है। शास्त्र से बाहर आकर लोक से जीवन और व्यवहार को जोड़ता है। आज के दिन काला तिल खाने का और काला तिल दान करने का बड़ा महत्व है।
बेटी एक बात बताओ, क्या तुम जानती हो कि इस माह में तिल का लाई क्यों बनाया जाता है?
नहीं बाबूजी!
बताइये न।
'आयुर्वेद सार संहिता' में इन दिनों तिल-गुड़ के सम्मिश्रण से बने पदार्थों के सेवन को स्वास्थ्यवर्द्धक एवं बलवर्द्धक बताया गया है। तिल का सेवन इसलिए कि तिल से मिलता है कैल्शियम और सूर्य की उष्णता से हमारी त्वचा में बनता है विटामिन डी। विटामिन डी की सहायता से यह भोजन के कैल्शियम को आंतों द्वारा अवशोषित करता है और इस तरह से हड्डियों को मजबूत करता है। साथ ही साथ, तिल में पॉलीअनसैचुरेटेड वसा-अम्लों की प्रचुरता होती है। शरीर की धमनियों में रक्त का प्रवाह सुचारु रूप से होता रहे, इसके लिए यह अति आवश्यक है। ये अम्ल हृदय की ढेरों बीमारियों से बचाते हैं।
इस दिन तिल के झाड़, जिसको की तिलान्ठी बोलते हैं, उसका अलाव जलाकर तापने से बुजुर्गों की कमजोड़ पड़ी धमनियां खुलने लगती हैं और उनमें रक्त का प्रवाह शुरू हो जाता है। अर्थात उनमें जीवन का संचार शुरू हो जाता है।
हमारे पूर्वजों ने बहुत ही सरलतापूर्वक हमारे जीवन में उन सभी चीजों का समावेश किया, जो हमारे लिए आवश्यक है। आज के दिन सूर्य का शनैः-शनैः अपने पुत्र की राशि यानि शनि की राशि में प्रवेश होता है। शनि को काले तिल का अधिपति माना जाता है और सूर्य को अस्थियों का अधिपति माना जाता है। हमारे पूर्वजों ने कितनी सरलता से तिल को शनि और सूर्य से जोड़कर उससे होने वाले फायदे को समझाया। शरीर में विटामिन डी की कमी दूर होती है, रक्त का प्रवाह सुचारु रूप से होने लगता है और हड्डियां मजबूत होती हैं।
सांस्कृतिक दृष्टि से भी इसके महत्व को जान लीजिये दुल्हिन!
अपने देश में पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक हर राज्य और हर प्रान्त में तो मनाया ही जाता है, अखंड भारत में भी इसे काफी धूमधाम से मनाया जाता है। हमारे इस त्योहार का वैश्विक विस्तार मैंने अभी-अभी अपनी यूरोप यात्रा के समय जाना। इस दिन यूरोप की गंगा कही जाने वाली नदी है डेन्यूब नदी के किनारे बूडा शहर (बुडापेस्ट - यह बड़ा और पेस्ट दो शहरों से मिलकर बना है) के लोग बूडोत्सव मनाते हैं और इसमें भूमि पर सूर्य के अयनांश का ज्यामितीय चित्रण करते हैं और डेन्यूब नदी से जल को लाकर उसे अर्पित करते हैं। हमारी संस्कृति का वैश्विक विस्तार हमें गौरव से भर देता है। अब इस समय दान और स्नान के महत्व को भी जानिए।
' तेन त्यक्तेन भुञ्जितः' खूब कमाओ मगर उसका दान भी करो?
दान कैसे करो?
वैशिष्ट्द्वैत के अनुसार दान देते समय आप स्वयं की आत्मा का स्वयं के इष्ट के साथ मिलान कर सूर्य के समक्ष खड़े हो जाओ और प्रातः काल आपके सन्मुख खड़े व्यक्ति में उस ईश्वर का दर्शन करके उनका सम्मान करो। दान के लिए वहां सम्मान शब्द का प्रयोग किया गया है। उन्हें ये महसूस मत कराओ कि तुमने उन्हें निहुच दी यह महसूस कराओ की तुमने उनके सम्मानस्वरूप यह भेंट अर्पित की।
प्रातः काल (पुण्य काल) नदी के जल में स्नान का बड़ा महत्व है। इस समय सूर्य की किरणें जब प्रवाही जल पर पड़ती हैं, वह आपके शरीर में फोटोन और न्यूट्रॉन की मात्रा बढ़ाने वाली होती है।
बीमारी और संक्रमण के काल में गंगा स्नान या किसी भी नदी में स्नान से दूर रहें। कहते हैं न कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।
अरे दोनों ससुर-बेटी बात ही करती रहोगी, या कल की तैयारी भी करोगी? लाई बनाने चलोगी भी अब, मामा ने कहा।
हां मामा, बस जा ही रहे हैं हम और मां लाई बनाने।
नंदी खुश थी कि आज उसने मकर संक्रांति और उत्तरायण के रहस्य को जाना।

(लेखिका एक वरिष्ठ ज्योतिषविद् हैं।)

20 जनवरी : नरक निवारण चतुर्दशी- भगवान भोले शंकर का अति प्रिय चतुर्दशी व्रत

- ज्योतिषाचार्य पंडित तरुण झा

भारत के प्रसिद्ध एवं विश्वसनीय ज्योतिष संस्थान में एक ब्रज किशोर ज्योतिष संस्थान, प्रताप चौक, सहरसा के संस्थापक ज्योतिषचार्य पंडित तरुण झा ने बतलाया है कि माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का धार्मिक दृष्टि से काफी महत्व है, इसे नरक निवारण चतुर्दशी भी कहते हैं। इस साल 20 जनवरी (शुक्रवार) को यह तिथि पड़ रही है। पुराणों के अनुसार इस तिथि पर शंकर भगवान की पूजा करने से आयु में वृद्धि होती है। इस दिन शिव का ध्यान करने से सिद्धियों की प्राप्ति होती है। इस व्रत में बेर का प्रसाद अर्पित करने का विधान है।

इस वजह से खास है यह तिथि - शास्त्रों के अनुसार इस दिन पार्वती माता और भगवान शिव का विवाह तय हुआ था। इस तिथि के ठीक एक महीने के बाद फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि को भगवान शिव का देवी पार्वती के साथ समपन्न हुआ था, इसलिए यह दिन खास महत्व रखता है, वैसे तो हर माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को भगवान शिव की पूजा के लिए श्रेष्ठ है, लेकिन शास्त्रों के अनुसार माघ और फाल्गुन माह की चतुर्दशी शंकर भगवान को सर्वप्रिय है, जिस कारण इन दोनों ही तिथियों को शिवरात्रि के समकक्ष ही माना जाता है। इस दिन शिव ही नहीं, शिव के साथ पार्वती और गणेश की पूजा करने से मनोकामना पूरी होती है। शास्त्रों के अनुसार जहां स्वर्ग में मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त होता है, वहीं नरक में अपने बुरे कामों के फलस्वरुप कष्ट झेलने पड़ते हैं, इससे मुक्ति पाने के लिए यह तिथि विशेष है, इसलिए इसे नरक निवारण चतुर्दशी कहा जाता है। इस दिन विधि विधान से पूजा करके नरक से मुक्ति मिलती है, ऐसी पौराणिक मान्यता है।

बेलपत्र और बेर चढ़ाना लाभप्रद

इस दिन भगवान शिव को बेलपत्र और बेर जरूर चढ़ाना चाहिए। अगर उपवास करें तो व्रत को बेर खाकर तोड़ना चाहिए। साथ ही इस दिन रुद्राभिषेक करने से बहुत लाभ होता है।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
किस्म दर्जनों हैं पाखी की
उड़ती-फिरती चहक सुनाती
रंग-बिरंगे पंखोंवाली
उजली, पीली, भूरी, काली
इन चिड़ियों से खुश रहने का
सीखें गुर हम तो अपना
उद्धार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में जीवों का मेला
कोई जीव न रहे अकेला
भांति-भांति के प्राणी अनेक
जैव-विविधता के ये टेक
कुछ प्राणी को माँस रुचे तो
कुछ प्राणी लेते हैं
शाकाहार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

गंगा विलास- देश में रिवर क्रूज टूरिज्म के नए युग का सूत्रपात

जल-पर्यटन मामले में भारत ने रचा नया इतिहास, पीएम मोदी ने वाराणसी में किया रवाना

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में देश ने एक और नया इतिहास रचा है। प्रधानमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से वाराणसी में दुनिया के सबसे लंबे रिवर क्रूज-एमवी गंगा विलास को झंडी दिखाकर रवाना किया और टेंट सिटी का उद्घाटन किया। उन्होंने 1000 करोड़ रुपये से अधिक की कई अन्य अंतर्देशीय जलमार्ग परियोजनाओं का शुभारंभ और शिलान्यास भी किया। रिवर क्रूज टूरिज्म को बढ़ावा देने के प्रधानमंत्री के प्रयास के अनुरूप, इस सेवा के लॉन्च के साथ रिवर क्रूज की विशाल अप्रयुक्त क्षमता का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा और यह भारत के लिए रिवर क्रूज टूरिज्म के एक नए युग का सूत्रपात करेगी।

सभा को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने भगवान महादेव की जय-जयकार की और लोहड़ी के शुभ अवसर पर सभी को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने हमारे त्योहारों में दान, आस्था, तपस्या और आस्था तथा उनमें नदियों की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा यह नदी जलमार्ग से संबंधित परियोजनाओं को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है। उन्होंने कहा कि काशी से डिब्रूगढ़ तक के सबसे लंबे रिवर क्रूज को आज झंडी दिखाई जा रही है, जो विश्व पर्यटन मानचित्र पर उत्तर भारत के पर्यटन स्थलों को सामने लाएगा। उन्होंने कहा कि आज वाराणसी, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार, असम में समर्पित की जा रही एक हजार करोड़ रुपये की अन्य परियोजनाएं पूर्वी भारत में पर्यटन और रोजगार की संभावनाओं को बढ़ावा देंगी। प्रत्येक भारतीय के जीवन में गंगा नदी की केंद्रीय भूमिका के बारे में चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि गंगा जी हमारे लिए सिर्फ एक जलधारा भर नहीं है, बल्कि यह प्राचीन काल से हमारे महान भारत की तप-तपस्या की साक्षी हैं। उन्होंने कहा कि भारत की स्थितियां-परिस्थितियां कैसी भी रही हों, मां गंगे ने हमेशा कोटि-कोटि भारतीयों को पोषित किया है, प्रेरित किया है। श्री मोदी ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद की अवधि में गंगा किनारे के आस-पास का क्षेत्र विकास में पिछड़ गया, जिससे इस क्षेत्र से आबादी का भारी पलायन हुआ। प्रधानमंत्री ने इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से निपटने के लिए दोहरे दृष्टिकोण की व्याख्या की। एक ओर नमामि गंगे के माध्यम से गंगा की सफाई का अभियान चलाया गया तो दूसरी ओर अर्थ गंगा का सहारा लिया गया। 'अर्थ गंगा' में जिन राज्यों से गंगा गुजरती है, वहां आर्थिक गतिशीलता का वातावरण बनाने के लिए कदम उठाए गए हैं।

अध्यात्म और पर्यटन का अनूठा संगम : रिवर क्रूज के अनुभव पर प्रकाश डालते हुए, प्रधानमंत्री ने बताया कि इसमें सभी के लिए कुछ न कुछ खास है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता में रुचि रखने वालों के लिए काशी, बोधगया, विक्रमशिला, पटना साहिब और माजुली जैसे गंतव्यों को कवर किया जाएगा, एक बहुराष्ट्रीय क्रूज अनुभव की तलाश करने वाले पर्यटकों को बांग्लादेश में ढाका से होकर जाने का अवसर मिलेगा और जो भारत की प्राकृतिक विविधता को देखना चाहते हैं, उनके लिए यह सुंदरवन और असम के जंगलों से होकर गुजरेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह क्रूज 25 विभिन्न नदी धाराओं से होकर गुजरेगा, इसलिए उन लोगों के लिए इस क्रूज का विशेष महत्व है, जो भारत की नदी प्रणालियों को समझने में गहरी रुचि रखते हैं।

रोजगार के भी अवसर मिलेंगे : उन्होंने यह भी कहा कि यह उन लोगों के लिए एक सुनहरा अवसर है, जो भारत के असंख्य पाक और व्यंजनों का पता लगाना चाहते हैं। प्रधानमंत्री ने क्रूज पर्यटन के नए युग पर प्रकाश डालते हुए कहा, "कोई भी इस क्रूज पर भारत की विरासत और इसकी आधुनिकता के असाधारण समामेलन को देख सकता है, जहां देश के युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।" प्रधानमंत्री ने कहा, "विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह आकर्षण होगा ही, देश के भी जो पर्यटक पहले ऐसे अनुभवों के लिए विदेश जाते थे, वे अब पूर्वी-उत्तर पूर्वी भारत का रुख कर पाएंगे।" उन्होंने यह भी बताया कि बजट के साथ-साथ लग्जरी अनुभव को ध्यान में रखते हुए क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए देश के अन्य अंतर्देशीय जलमार्गों में भी इसी तरह की सुविधाएं तैयार की जा रही हैं।

प्रधानमंत्री ने भारत में विकासशील जलमार्गों की निरंतर विकास प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'एक विकसित भारत के निर्माण के लिए मजबूत कनेक्टिविटी आवश्यक है।' प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत की नदी जल शक्ति और देश के व्यापार और पर्यटन को नई ऊंचाई देगी और उन्होंने सभी क्रूज यात्रियों के लिए सुखद यात्रा की कामना की। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, केंद्रीय जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्वानंद सोनोवाल सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

51 दिनों में 3200 किलोमीटर की यात्रा

एमवी गंगा विलास उत्तर प्रदेश के वाराणसी से अपनी यात्रा शुरू करते हुए 51 दिनों में लगभग 3,200 किलोमीटर की यात्रा करके भारत और बांग्लादेश में 27 नदी प्रणालियों को पार करते हुए बांग्लादेश के रास्ते असम के डिब्रूगढ़ तक पहुंचेगा। एमवी गंगा विलास में सभी लक्जरी सुविधाओं के साथ तीन डेक, 36 पर्यटकों की क्षमता वाले 18 सुइट हैं। पहली यात्रा में स्विट्जरलैंड के 32 पर्यटक पूरी यात्रा के लिए जा रहे हैं। एमवी गंगा विलास क्रूज को दुनिया के सामने देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए डिजाइन किया गया है। विश्व धरोहर स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों, नदी घाटों और बिहार में पटना, झारखंड में साहिबगंज, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, बांग्लादेश में ढाका और असम में गुवाहाटी जैसे प्रमुख शहरों सहित 50 पर्यटन स्थलों की क्रूज की 51 दिनों की यात्रा की योजना बनाई गई है। यह यात्रा पर्यटकों को एक शानदार अनुभव देगी और भारत और बांग्लादेश की कला, संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिकता में शामिल होने का अवसर देगी।

वाराणसी में टेंट सिटी

क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाओं का दोहन करने के लिए गंगा नदी के तट पर टेंट सिटी की परिकल्पना की गई है। यह परियोजना शहर के घाटों के सामने विकसित की गई है, जो विशेष रूप से काशी विश्वनाथ धाम के उद्घाटन के बाद से वाराणसी में रहने की सुविधा प्रदान करेगी और पर्यटकों की बढ़ती संख्या की जरूरत को पूरा करेगी। इसे सार्वजनिक निजी भागीदारी के प्रारूप में वाराणसी विकास प्राधिकरण द्वारा विकसित की गयी है। पर्यटक आसपास के विभिन्न घाटों से नावों द्वारा टेंट सिटी पहुंचेंगे। टेंट सिटी हर साल अक्टूबर से जून तक जारी रहेगी और बारिश के मौसम में नदी के जल स्तर में वृद्धि के कारण तीन महीने के लिए हटा दी जाएगी।

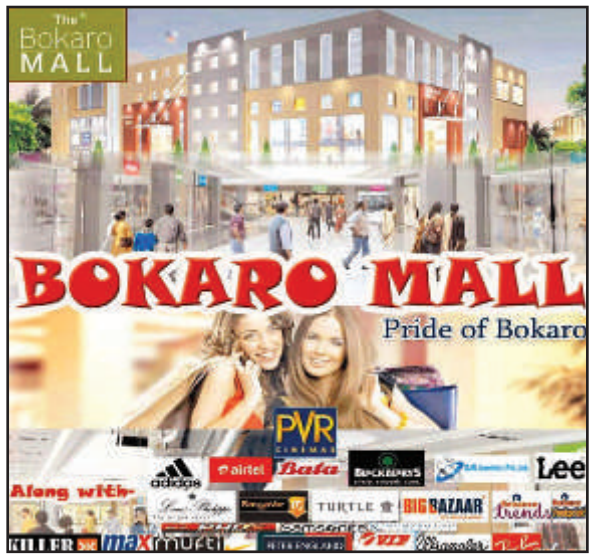

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।

E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवार: संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).